

शोभा की निधान गौरी कहां से तूं आई,
कौन तेरो पिता और कौन तेरी माई।

बृज गलियों में कभी दीखि नहीं पाई,
तेरी रूप राशि मेरे नैनों में समाई॥

बाबा हमारा है भूप वृषभान,
नहीं कोई जग में जिनके समान।
खेलती रहूं पितु षौरि प्रधान,
काहे बृज आवें सुनो सांवरे सुजान॥
माखन का चोर सुना नन्द का कन्हाई,
जिसके कारण सब गोपी डर पाई॥

माखन का चोर तेरी क्या करे चोरी,
काहें डरपत हो कुंअरि किशोरी।
शील में सुघड़ और देखने में भोरी,

हिलमिल खेलो आय मेरे संग गोरी।
छोड़ि दो संकोच तोहिं बाबा की दुहाई,
मानियो विनय मेरी कीरति की जाई॥

काहे को सौगंध देते सांवरे किशोर,
कैसे यहां आने देंगे मात तात मोर।
काहे को करत तुम इतनी निहोर,
बतियों में मोहि लिया हाय मन मोर।
क्या तुमही हो नन्द के किशोर सुखदाई,
झूठी तेरी बातें क्यों लोगों ने उड़ाई॥

माता मेरी यशुमति शील की निधान,
पिता नन्दबाबा मेरा बड़ा महिरबान।
पिताजी के साथ आऊं गइया दुहान,
वहां मिलि लीजो मोहि बेटी वृषभान।
प्रेम चितवन लखि मैगसि मुसकाई,
युगल मिलन पै बान्ही बलि जाई॥

